सद्गुरू स्वरूप ऋषित्व शक्ति प्राप्ति दीक्षा

प्रत्येक साधक को इस बात पर गर्व तो होना ही चाहिये कि वह इस ब्रह्माण्ड के सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मऋषि (सद्गुरुदेव) के मानस पुत्र है। परन्तु केवल ऋषि पुत्र होना ही महानता अथवा गर्व की बात नहीं है। अपितु हमारे जीवन की सार्थकता तब सिद्ध होगी जब हम स्वयं ऋषि स्वरुप, अपने आराध्य सद्गुरु स्वरुप बन सकें। गर्ग, सुश्रुत, दधीचि, कणाद, अगस्त्य, जैसे योग्य व एवं उनके ही सदृश ब्रह्मत्व की प्राप्ति हो सके। सद्गुरुदेव नारायण जो विज्ञ, चेतनावान, जाग्रत हैं, अपने सामान्य से बाह्य स्वरूप के अन्तर्गत परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी महाराज का विराट व्यक्तित्व समाहित किये हैं, जिसकी दिव्यता और साधनात्मक श्रेष्ठता के समक्ष सम्पूर्ण विश्व के योगी प्रणम्य और नतमस्तक हैं। भारतीय ऋषियों, मनीषियों का ज्ञान और विज्ञान केवल आध्यात्मिकता तक ही सीमित नहीं था, बल्कि भौतिकी, खगोल विज्ञान, गणित और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में भी उनका योगदान अत्यंत गहरा रहा है।

मनुष्य जन्म लेते ही स्वयं को अपने परिवार-समाज के बंधकर, उसी के नियम, मर्यादाओं का उसे पूरे जीवन पालन करना पड़ता है। अधिकांश व्यक्ति इन्हीं बंधनों के आस-पास ही अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं। कुछ विरले ही स्वयं से परिचय का प्रयास करते हैं और उनमें से कुछ ऐसे होते हैं, जो पूरी जीवन यात्रा इसी रहस्य को सुलझाने में लगा पाते हैं। वर्तमान में जितने भी संत, बाबा, गुरु हैं सभी के अनुयायी, पूजा, जप, तप, साधना, सत्संग आदि क्रियायें अपने सांसारिक सुख की पूर्ति हेतु ही सम्पन्न करते हैं।

सत्य भी यही है कि सांसारिक जीवन में अन्य विषयों पर सोचने-समझने अथवा क्रियात्मक रूप देने के लिये आज के मनुष्य के पास समय का अभाव होता है। परन्तु यदि सही ढंग से प्रयास किया जाये, तो थोड़ा समय ईश्वर स्तुति, गुरुत्व चेतना को आत्मसात करने में दिया जा सकता है। कालान्तर में अनेक कारणों से इस परम्परा में ह्रास आ गया। जीवन मूल्यों में आये परिवर्तन और व्यक्ति की प्राणश्चेतना में न्यूनता के कारण जीवन का गौरव और अलौकिक ज्ञान शक्ति की उपलब्धि प्राप्त करना दुरुह बन गया, किन्तु ऐसा भी नहीं है कि ये विद्याएं, यह ज्ञान, इन अलौकिक शक्तियों को आत्मसात नहीं किया जा सकता।

ऋषि पंचमी दिवस कोई सामान्य दिवस ना होकर समस्त ऋषि परम्परा का तेजस्वी, चेतनामय दिवस है, जिसमें ऋषियों की विराट चेतना का समावेश है, उनकी तपस्या की शक्ति और ऊर्जा की तेजस्विता है। वह संस्कार है जिसके माध्यम से इस संसार सागर में भी स्वयं की बुद्धि को सन्मार्ग की ओर अग्रसर किया जा सके। अतः इस अति विशिष्ट दिवस पर प्रत्येक मनुष्य को यह विशिष्ट दीक्षा ग्रहण करनी चाहिये। विशेष रुप से बाल-गोपाल, संतान को यह विशिष्ट दीक्षा ग्रहण कराने से उनके अपने अन्दर का सुप्त ऋषित्व सक्रिय होकर जागृत हो सकेगा। तथा वे भी अपने जीवन में पूर्णता व श्रेष्ठता के पथ पर अग्रसर होते हुये पूर्ण ऋषित्व क्षमता को प्राप्त कर अद्वीतीय बन सकेंगे।

सद्गुरु स्वरूप ऋषित्व शक्ति दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648
न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460
Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490
आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966
सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।